INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL
ISSN NO : 2230-7850
IMPACT FACTOR : 5.1651 (UIF)
VOLUME - 13 | ISSUE - 9 | OCTOBER - 2023

आधुनिकता के बोध और उपन्यासकार कृष्णा सोबती

प्रा. प्रमोद घन
विभाग प्रमुख, हिंदी,
तोष्णीवाल कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, सेनगांव, जि. हिंगोली.

संक्षेप:

मनुष्य के व्यक्तित्व का विकास जीवन की विभिन्न अवस्थाओं में होता है। युवावस्था एक ऐसी ही अवस्था है जिसमें व्यक्तित्व का विकास पूर्णता की सीमा लगभग प्राप्त करता है। मनुष्य जीवन में युवावस्था का अपना ही एक अलग महत्व होता है। उसके महत्व का उल्लेख करते हुए किसी ने उसे स्वर्णकाल कहा तो किसी ने उत्कर्ष काल और किसी ने बसंत काल की स ंज्ञा दी है। नये विचार और नया ज्ञान ग्रहण करने और उसे आत्मसात् करने के लिए इस आयु का मन अत्यधिक ग्राह्य होता है। यह अवस्था, आशा, अपेक्षा, उत्साह, उमंग तथा साहस का परिपूर्ण कोश होती है इसलिए संसार के महत्वपूर्ण कार्य प्राय: युवावस्था के ही नाम हैं। विशेष सोचनीय बात यह है कि हमारे देवी-देवताओं का स्वरूप भी युवावस्था का ही है। यही कारण है मनुष्य जीवन में युवावस्था को सर्वोत्तम काल माना जाता है।

परिचय:

आज के युवा आने वाले भविष्य के निर्माता हैं। राष्ट्र की सम्पति है, आधार स्तंभ है। अत: युवा समाज के महत्वपूर्ण अंग होते हैं लेकिन आधुनिक युग में युवा समाज के चिंतनीय विषय बन गए हैं। सारे समाज का ध्यानाकर्षण युवा पीढ़ी हो गई है। युवा जीवन से सम्बन्धित अनेक पहलुओं का अध्ययन हुआ है और हो रहा है। परन्तु युवाओं की मानसिकता का अध्ययन व्यापक नहीं हो पाया है। मनोवैज्ञानिक अध्ययन तथा विश्लेषण से युवा मानसिकता का ज्ञान हो सकता है। आज कॉरपोरेट और पूँजीवाद के कारण हमारा अस्तित्व खतरे में पड़ गया है। साथ ही इसने जीवन को इतना जटिल बना दिया है कि नैतिकता आदर्श मूल्य व चरित्र आदि सब कुछ निरर्थक हो चुके हैं। रिश्ते मात्र बनावटी बन गए हैं। मनुष्य एकदम अकेला हो गया है। उसे अपनी जड़ों से कट जाने की पीड़ा अलग से सता रही है। उदारीकरण से विकसित इस भौतिक चकाचौंध ने जहाँ पारम्परिक एवं जड़ मूल्यों को खण्डित किया है वही कुछ नए नैतिक मूल्यों की सृजना भी की है। सबसे पहले अगर हम परिवार की बात करें तो हमारी परम्परा के अनुसार बड़े-बूढ़ों का आदर करना एवं उनकी परम्पराओं का पालन करना हमारा नैतिक दायित्व बनता है। चाहे ये परम्पराएँ विकृत ही क्यों न हो, लेकिन आज की युवा पीढ़ी ऐसी किसी पारिवारिक परम्पराओं को नहीं मानती जिसके कारण उनका स्वतंत्र अस्तित्व खण्डित हो।

आधुनिक युग में, देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों में असाधारण परिवर्तन हुए हैं। कई प्राचीन मान्यताएं टूट गईं और कई नई मान्यताओं ने जीवन में अपना स्थान पाया। पारिवारिक और सामाजिक जीवन में आए क्रांतिकारी परिवर्तनों के प्रभाव ने आधुनिक नारी को एक नई मानसिकता प्रदान की है। वह व्यक्तिगत, सामाजिक और पारिवारिक क्षेत्रों में पुरुषों के बराबर होने का दावा करने लगी है। आज की महिलाएं अपनी स्थिति से वाकिफ हैं। और अपनी क्षमता को समझते हुए वह आगे बढ़ रही है। इसी का नतीजा है कि आज महिलाएं खुद को पुरुषों की तरह स्वतंत्र मानने लगी हैं और उन्हें समाज में एक अलग पहचान मिलनी शुरू हो गई है।

कृष्णा सोबती ने उपन्यासों के क्षेत्र में काफी सफलता हासिल की है। उपन्यास में महिलाओं ने पुरुष प्रधानता को तोड़ने वाली जागरूक महिलाओं के रूप में खुद को स्थापित किया है। परंपरा और रूढ़ियों को तोड़ना, अपनी आजादी के लिए लड़ना, कभी सफल होना, कभी असफल होना, नए मूल्यों को अपनाना, उनके उपन्यासों में चित्रित महिला का रूप वास्तव में अभिनव है। सोबतीजी न केवल आज के विरोधाभासी आधुनिक युग में एक महिला को भावनाओं के प्रवाह के साथ बहने वाली महिला के रूप में चित्रित करती हैं, बल्कि मनोवैज्ञानिक रूप से उस महिला का विश्लेषण भी करती हैं जो आत्म-सम्मान और समानता की इच्छा से प्रेतवाधित है।

उनके उपन्यासों में आधुनिक महिलाएं न तो देवी थीं और न ही राक्षस, उन्हें केवल मांस और रक्त से पैदा हुए मनुष्यों के रूप में चित्रित किया गया था। सोबती अपने उपन्यासों में नैतिक-अनैतिक मानदंड नहीं रखते हैं, इसलिए उनके उपन्यास में आधुनिक नायिकाएं वह सब कुछ करती हैं जो नैतिक और अनैतिक से परे है, जिसमें वे आनंद लेते हैं। आनंद चाहे पैसा कमाने से हो या सेक्स से। 'मित्रमर्जनी' के मित्र इस संबंध में विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। शील, शुचिता और शारीरिक पवित्रता की सामाजिक नैतिक मान्यताओं को एक कोने में रखकर मित्र अपनी स्वतंत्रता और स्वतंत्र अस्तित्व की स्थापना करते हैं। कृष्णा सोबती जी अपने उपन्यासों में चित्रित आधुनिक महिला पात्रों के माध्यम से चित्रित करना चाहती हैं कि केवल आदर्शों के आधार पर कोई नहीं रह सकता। वास्तविकता की भयावहता मनुष्य को तोड़ देती है और असमंजस में कुछ भी करने पर मजबूर कर देती है।

कोई भी व्यक्ति लंबे समय तक अभाव और दम घुटने की स्थिति में नहीं रह सकता है। इसलिए उनके पात्र मन के अनुसार जीने का एक रास्ता खोजते हैं, जिससे पात्रों को सही दिशा मिल सके, इस प्रकार वह गंतव्य तक पहुंच सके। मित्रा, रत्ती, महकबानो, चुना, अरण्य आदि महिला पात्र हैं।

'डार से बिछुड़ी' बेबसी और खामोश की अभिव्यक्ति है। रचना के मध्य में स्त्री के व्यक्तित्व की रेखा ऊपर की ओर जा रही है। एक महिला के चरित्र का विकास एक विशेष क्रम है, बाहर का। अंतिम लेकिन कम से कम, 'वेळ-सरगम' का जंगल - एक मजबूत, संतुलित, दृढ़ संकल्प और साहसी व्यक्ति। कृष्णा सोबतीजी का साहित्यिक प्रवास 'डार से बिछुड़ी' से शुरू होता है। यह १९५८ में प्रकाशित हुआ था। ऐतिहासिक विचार, असहयोग, सविनय अवज्ञा, स्वतंत्रता, आशा, महिलाओं के महत्व को विभिन्न हलकों में महसूस किया गया होगा। स्वतंत्रता के चावला के अंत ने महिलाओं को फिर से दिशा दी। तुर्की के विधायक और सुधार चावरी। महिलाएं ही आत्मनिर्भर हुईं। यह कहानी आजादी से पहले के पंजाब के एक परिवार की है। उपन्यास परंपराओं और रीति-रिवाजों को दरवाजे से अलग कर दिया जाता है, बीच में फंसी एक महिला की कहानी और घर आने पर उसके भटकने की कहानी। नायिका पाशा एक बेदाग गाँव की लड़की है। पाशो के टूटने के बाद उसे कई कांटेदार रास्तों से गुजरना पड़ा। पाशो के व्यक्तित्व में बनी विद्रोह की चिंगारी बाद में महक बनास, उनके परिवार, सुमित्रवंती और अंत में अरण्य के बीच अपने चरम पर पहुंच गई।

मित्रो मरजानी १९६७ में प्रकाशित मित्रो मरजानी कृष्णा सोबतीजी का सर्वाधिक चर्चित उपन्यास है। उपन्यास भी पंजाब प्रांत के क्षेत्रीय जीवन पर आधारित है। दोस्तों के माध्यम से, कृष्ण ने अपनी पत्नी को दो विशिष्ट विशेषताओं के साथ संपन्न किया - पारंपरिक रूढ़िवादी नैतिक मान्यताओं के खिलाफ विद्रोह और दूसरा जो शाश्वत मानवीय मूल्यों में गहरी आस्था रखते हैं। मित्र याचिकाकर्ता या योद्धा के रूप में अपने अधिकारों का दावा नहीं करते। सबसे पहले उसका आत्मविश्वास बढ़ता है। उनके परिवार में दोस्त संतुष्ट नहीं हैं। उनका बचपन आजादी में बीता। वह अपने ससुर के घर में वैसा ही व्यवहार करती है। मित्र पारंपरिक सामाजिक मूल्यों का विरोध करते हैं। सभी आदर्शों और पारंपरिक मूल्यों से चिढ़कर वह एक नई चेतना व्यक्त करती है जो विद्रोह की भूमि में नैतिकता को चुनौती देती है। धधकती लौ दोस्तों का व्यक्तित्व है, जिनकी गर्मी बंद दिमाग वाले लोगों के लिए सहन करना मुश्किल है। उसके पास कई लोगों की तरह इच्छा और इच्छा की दुनिया है। लेकिन दोस्त दूसरों से अलग होते हैं क्योंकि उनमें कोई निराशा या कमी नहीं होती है। यह पारदर्शी कपास की तरह है। वह अपने आप में सच को जीने की हिम्मत रखता है। इस अर्थ में मित्र ऐसे पात्र बन जाते हैं जो एक युग का निर्माण करते हैं हर नैतिकता, कर्मकांड और बंधन के ऊपर, दोस्त सिर्फ दोस्त होते हैं। नदी की तरह स्वतंत्र रूप से बहती है, बहती है, परिवार के तटों को तोड़ती है। यह उन सामाजिक मानदंडों को फिर से परिभाषित करता है जिनका महिलाओं ने सदियों से पालन किया है। बदलते सामाजिक परिप्रेक्ष्य में नैतिकता और नैतिकता की नई व्याख्याएं सामने आ रही हैं। 'मित्रो मरजानी' की नायिका मित्रो का व्यक्तित्व इस बदले हुए संदर्भ में महिलाओं की नई मानसिकता का प्रतिबिंब है।

'सूरजमुखी अंधेरे के':कृष्णा सोबती का उपन्यास 'सूरजमुखी अंधकार के' १९७२ में प्रकाशित हुआ था। इसके विषय आधुनिक समझ पर आधारित हैं। अपने विज्ञान में सबसे गहरी पहेली को देखते हुए, उन्होंने एक वयस्क

माध्यम और शिल्प स्थापित किया है जो एक साथ पारंपरिक शिल्प और मूल्यों को चुनौती देता है। सनफ्लावर डार्कनेस उपन्यास रतिका नाम की एक लड़की के मूड पर आधारित है, जिसका बचपन में बलात्कार किया गया था। उसे बचपन की उस त्रासदी की पीड़ा बच्चों और साथियों के बीच उपहास और घृणा के रूप में बार-बार सहना पड़ता है। लेकिन बड़ी बात यह है कि वह अपने ही अभाव की शिकार नहीं है। वह अपने साथियों की पिटाई करके अपने अपमान का बदला लेती है। इस घटना ने न केवल उनके बचपन को शाप दिया, बल्कि उनकी बाद की यादें भी उनके जीवन के भावनात्मक क्षणों में निहित थीं। आमतौर पर कहा जाता है कि वह रत्ती के मानस थे। लेकिन ऐसा लगता है कि यह सामाजिक ग्रंथि एक मानसिक ग्रंथि से बढ़कर है जो इस यातना से गुजरी महिला को सामान्य नहीं रहने देती। यह घटना व्यक्तिगत जीवन को भी प्रभावित करती है - स्मृति के रूप में बनाई गई जड़ता और घटना की प्रतिक्रिया - असामान्य नहीं, यह काफी सामान्य है, ऐसे समाज में जहां महिलाएं शरीर से ज्यादा कुछ नहीं हैं। यह उपन्यास एक शानदार कहानी है जो उन आदर्शों की भव्यता से वास्तविकता और सच्चाई का प्रतिनिधित्व करती है जिनकी सच्चाई कभी मरती नहीं है। उपन्यास एक ऐसी लड़की की कहानी बताता है, जिसके फुसफुसाते हुए बचपन ने समय से पहले ही अपनी बेरहम मासूमियत छोड़ दी और रति की लड़ाई, उसके शरीर और दिमाग के आसपास की दुश्मनी, मानव मन की गहन जिज्ञासा और सचेत संघर्ष का दस्तावेजीकरण किया।

'जिंदगीनामा' १९७९ में प्रकाशित कृष्णा सोबतीजी का उपन्यास 'जिंदगीनामा' कई मायनों में महत्वपूर्ण है। उन्हें १९८० में केंद्रीय अकादमी पुरस्कार मिला। इनके प्रकाशन से कृष्णा सोबती का नाम हिन्दी साहित्य में प्रसिद्ध हो गया। उपन्यास 'जिंदगीनामा' एक क्षेत्रीय उपन्यास के रूप में जाना जाता है। चिनाब और झेलम नदियों के बीच स्थित, वह गाँव जहाँ कृष्णजी ने अपना बचपन बिताया था, लेखक की स्मृति में बर्फ से ढकी चोटियों, लहरदार खेतों, तंदूरी रोटी की महक और उत्सव के माहौल के रूप में हमेशा के लिए अंकित है। वही यादें हमारी मातृभूमि के उपन्यास 'जिंदगीनामा' के कारण हैं। 'जिंदगीनामा' की कहानी पंजाबी संस्कृति, भाषा और क्षेत्रीय विशेषताओं के माध्यम से बहती है। पंजाब की संस्कृति खुलेपन और सामूहिकता की भावना के लिए जानी जाती है। यह विशेषता उनके स्त्री पात्रों में भी पायी जाती है। मौसी मेहरी, एक विधवा होने के नाते, अदालत के सामने कबूल करती है कि उसने फतेह शेरे के पकड़े जाने और बिना किसी डर के साहसी बनकर उभरने के बाद सब कुछ सावधानी से किया है। शाहजी की कामना करके रेबीज को रोका नहीं जा सकता था। कृष्णाजी के अमर नारी पात्रों का साहस और खुलापन वास्तव में पंजाबी संस्कृति की देन है। कृष्णा सोबतीजी ने अपने काम से पंजाब की महिला योद्धाओं को अमर कर दिया है।

'दिलो दानिश' दिलो दानिश १९९३ में प्रकाशित हुआ था। उपन्यास एक संयुक्त परिवार में बढ़ते मानवीय संबंधों की कहानी बताता है जो बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में पुरानी दिल्ली में बस गए थे। दिलो दानिश कृष्णजी की नई और अलग रचना है। यह संयुक्त परिवार की लुप्त होती परंपरा को आगे बढ़ाने वाले परिवार के सदस्यों के अंतरंग जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत करता है। देश को बांटकर बिखरने का जहर परिवारों में कड़वाहट लाने लगा है. समग्र जीवन शैली एक अलग पारिवारिक अस्तित्व के रूप में उखड़ने लगी है। जिसका असली रूप इस उपन्यास में दिखाई देता है। संयुक्त परिवार में सजा हुआ यह महल मानवीय रिश्तों की, दिल और दिमाग की, कई रिश्तों की, साधारण जिम्मेदारियों की कहानी है।

'समय सरगम' २००० में प्रकाशित कृष्णा सोबतीजी के उपन्यास समय-सरगम का विषय अद्वितीय है। इसमें उन्होंने महानगर में उच्च मध्यम वर्ग के वरिष्ठों की जीवन शैली, समस्याओं और मानसिकता को चित्रित किया है। उपन्यास के केंद्र में दो वयस्क पात्र ईशान और अरन्या हैं। दोनों की किस्मत में अकेलेपन की जिंदगी जीना तय है। ऐसे में दोनों एक साथ अकेलापन महसूस करने लगते हैं। उपन्यास के अन्य पात्र दमयंती और कामिनी, सभी वृद्धावस्था से घिरे हैं। लेकिन अरण्या खुद को किसी जवान से कम नहीं मानती हैं। समय सरगम के मौके पर कृष्णा सोबती जी ने बुजुर्गों की दुनिया में सूक्ष्म स्तर पर कई भावनाओं को मजाकिया अंदाज में व्यक्त करने की कोशिश की है, जिसका अंदाजा हमारे युवाओं को नहीं है। समय-सरगम समकालीन समाज में हर परिवार के बुजुर्गों के लिए एक त्रासदी है। पाशो से अरण्य तक की यात्रा नारी चेतना के विकास की कहानी है। कृष्णा सोबतीजी जीवन में परफेक्ट हैं। उन्हें सूर्य, वायु, जल, वृक्षों, पौधों और अपने आस-पास की हर चीज से असीम लगाव है। इस दुनिया से परे किसी और दुनिया की कोई इच्छा नहीं है। कृष्णजी की रचनाओं में इस लगाव को बार-बार व्यक्त किया गया है। इस प्रकार उपन्यास के क्षेत्र में उनका अमूल्य योगदान रहा है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्वतंत्रता के बाद के समाज का चित्रण किया है।

कृष्णा सोबतीजी ने अपने साहित्यिक जीवन में उपन्यास, कहानी, संस्मरणों के अतिरिक्त भी कुछ अन्य रचनाएँ लिखी हैं। किन्तु इसकी संख्या अत्यल्प है। उनके द्वारा 'सोबती एक सोहबत' में निम्नांकित अन्य साहित्य प्रकाशित हैं, 'मैं और मेरा समय' में संकलित, 'चंद नोट्स जिंदगीनामा पर', 'तब तक कुछ मालूम नहीं था', 'सूरजमुखी अँधेरे के:एक संस्मरण', 'मैं मेरा समय और मेरा रचना संसार' आदि शब्दों के आलोक में', 'सोबती वैद संवाद' आदि अन्य साहित्यिक लेख भी उनके द्वारा लिखे गए हैं।

निष्कर्ष:

उपरोक्त विवरण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि कृष्णा सोबतीजी का कथासाहित्य का क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है। आधुनिक परिवेश को उन्होने देश में व्याप्त समस्याओं को अपने उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से प्रकट किया है और अपनी रचनाओं के माध्यम से इन समस्याओं के समाधान हेतु भरसक प्रयास भी किए हैं।

संदर्भ:

१. कृष्णा सोबती, डार से बिछुड़ी, आईएसबीएन: ९७८८१२६७०२९९२, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण-२००३, पृष्ठ-१२३
२. कृष्णा सोबती, मित्रो मरजानी, आईएसबीएन: ९७८-८१२६७१२३६६, राजकमल प्रकाशन, ९वीं संस्करण-२०१८, पृष्ठ-९८
३. कृष्णा सोबती, यारों के यार, आईएसबीएन: ९७८८१२६७०७९३५, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण-२०१६, पृष्ठ-७०
४. कृष्णा सोबती, जिंदगीनामा, आईएसबीएन: ९७८८१२६७०७८०५, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष-२०१५, पृष्ठ-३९१
५. कृष्णा सोबती, दिलो दानिश, आईएसबीएन: ९७८८१२६७११९२५, राजकमल प्रकाशन, प्रकाशित वर्ष-२०१०, पृष्ठ-२३४.
६. कृष्णा सोबती, समय सरगम, आईएसबीएन: ८१-७१७८-९६२-५, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २००८, पृष्ट-१५७
७. कृष्णा सोबती, सूरजमुखी अंधेरे के, आईएसबीएन: ९७८८१२६७१६३९५, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, २००८, पृष्ट-१४१